ठगने वाले विज्ञापनों पर क्या रोक नहीं लग सकती?

मसाज सेंटर

'प्रिया मसाज सेंटर को अनुभवी, फ्रेश लड़के-लड़कियां चाहिये। प्रतिदिन हज़ारों कमायें। मौज-मस्ती अलग। संपर्क करें- मोबाइल नंबर- ....' इस तरह के अनेकों विज्ञापन अख़बारों में रोज़ ही धड़ल्ले से छप रहे हैं। इन विज्ञापनों से बड़े पैमाने पर जालसाजी की जा रही है। बेरोज़गारी की समस्या को देखते हुये मसाज पार्लर में काम करने और हज़ारों रुपये कमाने के चक्कर में नादान किस्म के युवक और युवतियां इन विज्ञापनों के जाल में फंसते हैं। पहले वे दिये गये मोबाइल नंबर पर संपर्क करते हैं। उस पर उन्हें बहुत ही भरोसे वाली भाषा में कहा जाता है कि वे काम पाने के लिये पहले अपना रजिस्ट्रेशन करायें। वे रजिस्ट्रेशन की फ़ीस बताते हैं जो हज़ार-डेढ़ हज़ार रुपये से कम नहीं होती और बैंक का अकाऊंट नंबर रकम जमा कराने के लिये दे देते हैं।

मसाज पार्लर में रोज़ ही हज़ारों रुपये कमाने और साथ ही मौज-मस्ती करने का मौका पाने की आशा में लड़के-लड़कियां दिये गये अकाऊंट नंबर में पैसे जमा कराने के बाद दिये गये मोबाइल से जब संपर्क करते हैं तो उन्हें कोई उत्तर नहीं मिलता। कई बार फ़ोन करने पर वह स्विच ऑफ़ बताया जाता है। लेकिन जैसे ही दूसरे फ़ोन से उनसे संपर्क किया जाता है, वे तुरंत जवाब देते हैं, पर यह जान कर कि फ़ोन करने वाले ने पैसे देकर रजिस्ट्रेशन करा रखा है, वे फ़ोन काट देते हैं और फ़िर कभी फ़ोन नहीं उठाते। चूंकि वे सिर्फ़ फ़ोन नंबर ही देते हैं, अपना पता नहीं, इसलिये उनसे सीधा मिल पाना मुश्किल ही नहीं, असंभव-सा होता है। चूंकि रजिस्ट्रेशन कराने वाले स्वयं को बेवकूफ बनाया गया समझते हैं, इसलिये वे इस संबंध में पुलिस में शिकायत करने में भी झिझकते हैं। अगर किसी ने शिकायत करने की हिम्मत जुटाई भी तो पुलिस वाले पता-ठिकाना न होने की बात कह कार्रवाई करने से बचना चाहते हैं। पर इस तरह के ठगों पर पुलिस चाहे तो उनके मोबाइल को सर्विलांस पर लेकर उनका पता-ठिकाना ले सकती है और उन पर कार्रवाई कर सकती है। इस बात में भी कोई दो राय नहीं हो सकती कि ठगी का यह मामला पुलिसिया सांठ-गांठ के बिना नहीं हो सकता। अख़बारों में इतने बड़े पैमाने पर इस तरह के विज्ञापन छपते हैं कि पुलिस की निगाह स्वयं इस पर जानी चाहिये। पर हमारे यहां की पुलिस ऐसी है कि चाहे थाने के सामने मर्डर और रेप भी हो जाये, जब तक इसकी शिकायत दर्ज नहीं कराई जायेगी, वह अपने आप कोई कदम नहीं उठायेगी। इसके अलावा ठगी के इस जाल में फंसने वाले युवक-युवतियां भी कम दोषी नहीं हैं। उन्हें यह समझना चाहिये कि जब इतने बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी की समस्या है तो मसाज सेंटर पर नौकरी करने से रोज़ाना हज़ारों रुपयों की कमाई कैसे हो सकती है। प्रतिदिन हज़ारों की कमाई तभी हो सकती है जब देह-व्यापार, तस्करी या अन्य कोई अवैध काम किया जाये।

फ्रेंडशिप क्लब

लोग़ों विशेषकर नौजवानों को अपने जाल में फंसाने के लिये नये-नये हथकंडे अपनाने वालों की कोई कमी नहीं है। फ्रेंडशिप क्लब भी उन्हीं हथकंडों में से एक है जो नौजवानों को अपने जाल में फंसा कर उनकी गांठ से सारी रकम निकलवा लेता है। इन क्लबों के चक्कर में फंसा व्यक्ति शर्म की वजह से इनकी शिकायत कहीं कर भी नहीं पाता। पर कुछ इस तरह के लोग़ भी होते हैं जो इनके खिलाफ़ पुलिस में शिकायत दर्ज करवाते हैं और पुलिस को कार्रवाई भी करनी पड़ती है। दिल्ली में फ्रेंडशिप क्लब चलाने वाले कई गिरोहों पर पुलिस ने छापेमारी की है, पर इनकी संख्या इतनी ज्यादा है कि बरसाती मेढकों की भांति इनकी गिनती भी नहीं की जा सकती। इनका सारा कारोबार मोबाइल फ़ोनों के सहारे चलता है। ये अख़बारों में जो विज्ञापन देते हैं, उनमें लिखा होता है कि हर प्रकार की लड़कियों और महिलाओं से वे दोस्ती करवायेंगे। कॉलेज गर्ल, मॉडल टाइप की गर्ल, एयर होस्टेस, कामकाजी गृहणियां यानी हर तरह की, हर उम्र की लड़कियां उपलब्ध हैं। साथ ही, यह भी लिखा होता है कि लड़कियों को क्लब की मेंबरशिप फ्री दी जायेगी। इन विज्ञापनों की भाषा ऐसी होती है कि कोई भी समझ सकता है कि फ्रेंडशिप के नाम पर क्या होता होगा। लड़कियों के शौकीन और वैसे लड़के जो नवसिखुये हैं जब इनके नंबरों पर फ़ोन करते हैं तो इन्हें मीठी और उत्तेजक नारी स्वरों में जवाब मिलता है। इन्हें पैसे जमा करवाने को कहा जाता है और अकाऊंट नंबर दे दिया जाता है। कई बार तो पता दे कर सीधा संपर्क करने के लिये कहा जाता है। इनके ऑफिस में कुछ लड़के और उत्तेजक पोशाकों में कुछ लड़कियां बैठी होती हैं। कुछ मीठी-मीठी बातों के बाद क्लब का मेंबर बनने के लिये लालयित लोग़ उनकी फ़ीस दे देते हैं और क्लब संचालक उन्हें दोस्ती करने के लिये कुछ मोबाइल नंबर पकड़ा देते हैं। इसके बाद दोस्ती करने, साथ-साथ घूमने और मौज-मजा करने के लिये जब नंबर मिलाये जाते हैं तो कोई जवाब ही नहीं मिलता। कभी-कभी भद्दी-सी गाली जरूर मिल जाती है। कभी फ़ोन ही बंद पड़ा मिलता है। ऐसी स्थिति में सिर धुनने के सिवा और कुछ भी नहीं किया जा सकता। ऐसे लोग़ जिस किसी के पास अपना दुखड़ा रोयेंगे, वही उनकी हंसी उड़ाने को तैयार मिलेगा। पुलिस में जायेंगे तो पहले पुलिस वाले ही उनका अच्छा मज़ाक उड़ायेंगे। वैसे कुछ दिनों पहले फ्रेंडशिप क्लब की धोखाधड़ी के एक शिकार ने पुलिस को आपबीती सुनायी और पुलिस ने कार्रवाई की तो एक गिरोह पकड़ा गया। फ्रेंडशिप कार्यालय में चार-पांच लड़कियां थीं जो लोग़ों के फ़ोन काल्स का जवाब देती थीं। उन्होंने बताया कि इस काम के लिये उन्हें तीन-चार हज़ार रुपये मासिक दिये जाते हैं। लेकिन इस धंधे से उक्त फ्रेंडशिप क्लब का संचालक लाखों रुपये कमा रहा था। इस तरह के क्लबों के जो शिकार होते हैं, उन्हें आसानी से ब्लैकमेल भी किया जा सकता है, इसलिये काफ़ी पैसे उड़ाने के बावजूद उनकी मनचाही बात नहीं होती तो भी वे चुप रहना ही बेहतर समझते हैं। आम तौर पर ऐसे क्लबों के संचालक अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं। अपने धंधे को चलाने के लिये जिन लड़कियों का इस्तेमाल वे करते हैं, वे भी यौन शोषण की शिकार होती हैं या पैसे की एवज में कुछ भी करने को तैयार रहती हैं। ये अपने ग्राहकों से मीठी-मीठी बातें तो खूब करती हैं, पर जैसे ही ग्राहक इनसे मिलने और मनचाही जगह पर चलने का प्रस्ताव रखता है, ये उसके फ़ोन कॉल्स का जवाब देना बंद कर देती हैं। ऐसे ग्राहकों को बहलाने के लिये मीठी-मीठी और सेक्सी बातें करने में उनका कुछ जाता नहीं, फ़ोन करने में पैसे का नुकसान तो क्लब के मेंबर बने लोगों को ही उठाना पड़ता है। कड़े-बड़े तथाकथित राष्ट्रीय अख़बार पैसे के लिये इनके विज्ञापन छापने में कोई बुराई नहीं देखता जबकि नैतिक आधार पर यदि देखा जाये तो अख़बारों को इनके विज्ञापन छापने और प्रसारित करने से गुरेज करना चाहिये। पुलिस इन मामलों में चाहे तो स्वत: संज्ञान ले सकती है और इन क्लबों के अलावा अख़बारों को भी साजिशकर्ता के रूप में लपेट सकती है।

चमत्कारी बाबा, तिलस्मी इल्म, हर समस्या का समाधान दो मिनट में

जी हां, आप हिंदी के किसी अख़बार को देखें, वर्गीकृत विज्ञापनों के पेज में आपको इस तरह के अनेकों विज्ञापन मिल जायेंगे। कोई मियां शाह जी बंगाली हैं तो कोई सीनियर बंगाली हैं, कोई काले इल्म के जादूगर हैं तो कोई वशीकरण के उस्ताद। ये लोग़ों की हर समस्या का समाधान करने को और वह भी फ्री में, तैयार बैठे हैं। कोई घंटे भर में समस्या का समाधान करता है तो कोई ग्यारह मिनट में। ये भविष्य बतलाने के साथ प्रेमी-प्रेमिकाओं को मिलवाते हैं, दावा करते हैं कि ऐसा वशीकरण करेंगे कि प्रेमी-प्रेमिका दौड़े आयेंगे। गृह क्लेश और अन्य बाधाओं से मुक्ति दिलाते हैं। जरूरत है सिर्फ़ एक फ़ोन मिलाने की। ऐसे उस्तादों के इतने विज्ञापन छपते हैं कि लगता है अभी भी हम 21वीं नहीं, 17वीं सदी में जी रहे हैं। ज़ाहिर है कि इनके ग्राहक होंगे, तभी तो इनके विज्ञापन छप रहे हैं। एक तरफ़ इंसान चांद पर से घूम आया है और मंगल ग्रह पर जाने की तैयारी कर रहा है, ये ग्रहों के नाम पर लोगों में अंधविश्वास फैला कर कमाई करने में लगे हुये हैं। कोई शनि के प्रकोप को शांत करने का दावा करता है तो कोई मंगल के। समाज में अंधविश्वास इतनी गहराई से जड़ें जमाये हुये है कि अच्छे खासे पढ़े-लिखे और पैसे वाले लोग़ भी अपने घरों अथवा दुकानों के आगे शनिवार को हरी मिर्चें और नींबू लटकाते हैं और यह कुछ लोगों के लिये अच्छा-खासा धंधा बन गया है। जहां समाज में कूपमंडूकता की हालत ऐसी हो, वहां अख़बारों के माध्यम से पंडितों-पुरोहितों और मुल्लाओं-बाबाओं द्वारा प्रचार किये जाने पर अच्छे-खासे लोग़ इनके जाल में फंस जाते हैं। ये जालसाज़ ज्यादातर महिलाओं को अपना शिकार बनाते हैं और कभी-कभी तो पैसों-गहनों की ठगी करने के साथ उनके जिस्म के साथ भी खेलते हैं और उन्हें ब्लैकमेल करते हैं। इस तरह की कई घटनायें प्रकाश में आ चुकी हैं।

सेक्स रोग से संबधित अश्लील विज्ञापन

इन चमत्कारी बाबाओं और पीरों को छोड़ें तो अख़बारों में कामशक्ति बढ़ाने वाली दवाओं और लिंगवर्द्धक यंत्रों के विज्ञापन थोक के भाव छपते हैं। इनकी भाषा बेहद अश्लील होती है। जापानी तेल, जापानी, अमेरिकन और भी कई तरह के लिंगवर्द्धक यंत्रों के चमत्कारी प्रभाव बताये जाते हैं। यही नहीं, स्त्रियों की योनि को भी कसावटी एवं कुंआरी जैसी बनाने का दावा इन विज्ञापनों में किया जाता है। इनके भी फ़ोन नंबर अखबारों में छपे होते हैं और लिखा होता है कि पैसे भेज घर बैठे दवा व यंत्र मंगवायें। साथ में कामसूत्र पुस्तिका फ्री में देने की बात कही जाती है। इन विज्ञापनों की बहुतायत को देखते हुये ऐसा लगता है कि अब पुरुषों में सिर्फ़ एक ही बीमारी रह गई है-नपुंसकता की। लोगों को उल्लू बनाने वाले इन ठगों और जालसाज़ों पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं है जबकि सरकार ने नीम-हकीमों और अवैज्ञानिक इलाज करने वालों पर कार्रवाई करने का कानून बना रखा है। दूसरी तरफ़, मीडिया जिसका काम जनता को जागरूकता को बढ़ाना है, वह पैसे की लालच में इस तरह की विज्ञापनबाजी को बढ़ावा दे रही है। **- प्रतिनिधि**

राहुल गांधी की रेलयात्रा

शताब्दी एक्सप्रेस जिस पर राहुल गांधी लुधियाना से दिल्ली की वापसी यात्रा कर रहे थे, पानीपत के पास पत्थर फेंके गये। इस पत्थरबाज़ी में तीन बोगियों की खिड़कियों के शीशे टूट गये। लेकिन उस बोगी में कुछ भी नहीं हुआ जिसमें राहुल सवार थे। वैसे राहुल चाहते तो प्राइवेट विमान से भी यात्रा कर सकते थे, पर कांग्रेस और केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई मितव्ययिता नाटक अभियान के तहत उदाहरण पेश करने के लिए उन्होंने शताब्दी से यात्रा की, पर हाल वही हुआ कि सिर मुंडाते ही ओले पड़े।

इस घटना के बाद विलासिता में आकंठ डूबे कांग्रेसी नेताओं को एक बहाना मिल गया कि सुरक्षा कारणों से वीवीआईपी लोग़ों को विमान से ही यात्रा करनी चाहिए और वह भी इकॉनामी क्लास में नहीं। क्यों जनाब? जब विमान में बैठ लिये और सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद कोई हादसा हुआ तो सिर्फ़ इकॉनमी क्लास में बैठे लोग ही उसके शिकार होंगे क्या? शिकार तो सभी होंगे, चाहे वे एक्जीक्यूटिव क्लास में बैठे हों अथवा बिजनेस क्लास में। वैसे यह स्पष्ट हो गया कि राहुल की इस यात्रा के बारे में हरियाणा सरकार को जानकारी नहीं थी। स्थानीय प्रशासन ने अपनी प्रतिक्रिया में यह कहा कि वीवीआइपी लोग़ जहां से गुजर रहे हों, उसकी जानकारी स्थानीय प्रशासन को अवश्य होनी चाहिए ताकि सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद की जा सके।

स्थानीय प्रशासन ने यह भी कहा कि उस इलाके में जहां शताब्दी ट्रेन पर पत्थर फेंके गये, यह एक आम बात है। शैतान लड़के ऐसा करते ही रहते हैं, दूसरे जहां यह घटना हुई वहां ट्रैक पर काम चलने के कारण ट्रेन की गति 20 किलोमीटर प्रति घंटे थी। प्रशासन ने कहा कि यह महज संयोग है कि पत्थरबाज़ी उस ट्रेन पर हो गई जिसमें राहुल सवार थे।

बहरहाल, जो कुछ भी हो, राहुल का जिन्हें इस देश की विशिष्ट सुरक्षा व्यवस्था हासिल है, ट्रेन द्वारा यात्रा करना एक दिखावे से ज्यादा और कुछ भी नहीं। पर राहुल समय-समय पर बड़े-बड़े दिखावे करते रहे हैं। लोकसभा चुनाव के पूर्व इन्होंने ग़रीबों की झोपड़ियों में रहने और खाना खाने का अत्यंत ही हास्यास्पद दिखावा किया और अब ट्रेन यात्रा कर एक अलग किस्म का दिखावा कर रहे हैं।

इस बात को भूला नहीं जा सकता कि राहुल ट्रेन की जिस बोगी में यात्रा करेंगे, उसमें जनसाधारण में से कोई व्यक्ति शायद ही सवार हो सके। पूरी बोगी में राहुल, उनके चमचे और सुरक्षा कर्मी ही रहेंगे। यह भी गौरतलब है कि शताब्दी जैसी ट्रेनों में ग़रीब आदमी शायद ही यात्रा कर पाता है, क्योंकि इसकी टिकटें अन्य ट्रेनों की तुलना में काफ़ी महंगी हैं। शताब्दी ट्रेनों में मध्यम वर्ग और उच्च मध्यम वर्ग के लोग़ ही ज्यादातर सफ़र करते हैं। अगर राहुल गांधी को ट्रेन यात्रा का वास्तविक 'आनंद' लेना हो तो उन्हें बिना किसी सुरक्षाकर्मी के बुर्का पहन कर साधारण एक्सप्रेस व मेल ट्रेनों की जनरल बोगियों में सफ़र करना चाहिए। इन बोगियों में बैठने के लिए लंबी-लंबी कतारें लगती हैं और पुलिसकर्मी पैसे लेकर लोग़ों को उनमें घुसने देते हैं। इनमें महिलायें और छोटे बच्चे तक शामिल हैं। एक बार बोगी के अंदर प्रवेश कर जाने के बाद हाथ-पांव हिला पाना भी कठिन हो जाता है। इन बोगियों में यात्री वैसे ही ठुंसे होते हैं जैसे बोरे में आलू। इन बोगियों में जिन्हें सीट मिल जाती है अथवा जो सौ-पचास रुपये देकर सीट खरीद लेते हैं, वे अपने आप को बहुत ही भाग्यवान समझते हैं। जिन्हें सीट नहीं मिलती, वे या तो खड़े रहते हैं अथवा नीचे बैठ जाते हैं। इनमें अगर कोई शौचालय जाना चाहे तो एक तो वहां तक पहुंच नहीं सकता और बंदरों की तरह उछल-कूद कर पहुंच भी गया तो शौचालय में प्रवेश मुश्किल हो जाता है, क्योंकि दरवाजे, सामान और आदमियों की वजह से जाम होते हैं। ऐसी स्थिति में यात्रियों में परस्पर विवाद और झगड़ा होना नितांत स्वाभाविक है। इस तरह की जनरल बोगियों में लोग़ पंद्रह से अठारह और बीस घंटों तक का सफ़र कर लेते हैं। जहां तक रिजर्व बोगियों का सवाल है तो उनमें भी हालत कोई खास अच्छी नहीं होती। इस बोगी में यात्रा का आनंद लेना हो तो राहुल साइड की बर्थ पर रिजर्वेशन करा कर कहीं की यात्रा करें। काफ़ी मजा आयेगा। पहले साइड बर्थ दो ही हुआ करती थी, पर लालू ने रेलवे को फायदा पहुंचाने के लिए साइड में भी तीन बर्थ का इंतजाम कर दिया। अब जिन्हें ये बर्थ मिल जाते हैं, वे पूरी यात्रा के दौरान उंकड़ू बने बैठे होते हैं। खाना, पीना और अख़बार तक पढ़ना दुश्वार। इससे भी जी न भरे तो राहुल ब्लू लाइन बसों में सफ़र कर लें। दिल्ली से बाहर जाना भी नहीं पड़ेगा। और हो सके तो लोकल जो ईएमयू ट्रेनें चलती हैं, एकाध बार उसमें भी यात्रा करने का शौक फर्मा लें। तब उन्हें अंदाजा होगा कि इस देश की जनता जो सरकार और उसके मंत्रियों की नज़र में कीड़े-मकोड़ों से ज्यादा महत्व नहीं रखती, कैसे सफ़र करती है।

- ग़रीबदास